अध्याय-7
ओलम्पिक, एशियाई व राष्ट्रमण्डल खेलें

प्राचीन ओलम्पिक खेलें- यूनानी गणराज्य के देश उन दिनों आपस में लड़ते रहते थे। लड़ाई के मध्य शांति के प्रयास करने के लिये प्राचीन ओलम्पिक खेलों का आयोजन प्रारम्भ किया गया। आधुनिक ओलम्पिक से लगभग 2676 वर्ष पूर्व 776 ईसा पूर्व ग्रीस (यूनान) के ओलम्पिया शहर में प्राचीन ओलम्पिक खेल प्रारम्भ हुए। यह खेल प्राचीन समय में बहुत लोकप्रिय थे। 393 ई. में रोमन शासक थियोडोसिपस ने ओलम्पिक खेलों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इसके बाद अगली दो शताब्दियों में बाढ़, भूकंप और विदेशी आक्रमणों की तबाही से ओलंपिया शहर बर्बाद हो गया और धीरे-धीरे ओलम्पिक खेलों का नाम मिट गया।

प्राचीन ओलम्पिक खेलों में महिलाओं को खेलों में भाग लेने की इजाजत नहीं थी क्योंकि पुरुष नग्न होकर प्रतियोगिता करते थे। प्राचीन ओलम्पिक खेल पाँच दिन तक चलते थे जिन्हें करीब 1000 वर्ष तक बिना किसी रुकावट के आयोजित किया गया। ओलम्पिया में आयोजित खेलों में भाग लेने के इच्छुक खिलाड़ियों को एलिस नामक पहाड़ी में विशेष प्रशिक्षण में भाग लेना पड़ता था। यह प्रशिक्षण लगभग छः सप्ताह का होता था। जिन खिलाड़ियों का खेलों के लिए चयन होता था उन्हें एलिस पहाड़ी से ओलम्पिया शहर तक जो करीब 26 मील था पैदल चलकर प्रतियोगिता के तीन दिन पहले पहुँचना होता था। प्रतियोगिता को देखने हजारों दर्शकों का समूह उनका स्वागत करता व प्रतियोगिता कुल पाँच दिनों तक चलती थी। जैतून पेड़ की पत्तियों का बना ताज़ जीतने वाले को पहनाया जाता था। जीतने वाले के नाम से कबूतरों को ग्रीस के कोने-कोने तक समाचार पहुँचाने जाने हेतु उड़ाया जाता था।

प्रथम प्राचीन ओलम्पिक खेलों में केवल एक स्टेड रेस का आयोजन किया गया लेकिन खेलों के विकास का सिलसिला आयोजन के साथ-साथ विकसित होने लगा जिससे खेलों को पाँच दिनों तक आयोजित किया जाने लगा। राजा थियोडोसिपस के कहने पर इनका आयोजन बन्द हो गया।

आधुनिक ओलम्पिक खेलें- प्राचीन ओलम्पिक खेलों के लगभग 2676 वर्ष पश्चात् आधुनिक ओलम्पिक खेलों का विकास हुआ जब डॉ. बैरन डी कुबर्टिन ने खेलों के आयोजन हेतु खेल कांग्रेस के गठन की पहल की। इटली राज्य के एक छोटे से शहर में पैदा हुए एवं फ्रांस में बसे इस जमींदार घराने के व्यक्ति ने 25 नवम्बर 1892 को 'सोरबोन' शहर की एक बैठक में यह घोषित किया कि ''ओलम्पिक खेलों का पुनः आयोजन किया जाना चाहिये। खेलों के विकास व युवाओं को शिक्षित करने के पक्ष में

रहे डॉ. कुबर्टिन की पहल से एक बैठक का आयोजन वर्ष 1874 में पेरिस शहर में किया। प्रथम आधुनिक ओलम्पिक खेलों का आयोजन वर्ष 1876 में एथेन्स शहर में कराने का निर्णय लिया गया।''

आधुनिक ओलम्पिक खेलों का आयोजन कराने का मुख्य उद्देश्य विभिन्न देशों के खिलाड़ियों को एक साथ लाकर भाईचारा, नैतिकता एवं शारीरिक क्षमताओं का विकास करना था। ओलम्पिक खेलों का आयोजन, आयोजित करने वाले शहर का सम्मान समझा जाता है इसलिये देश के नाम से पहले ओलम्पिक खेलों के शहर के नाम से पुकारा जाने लगा। ओलम्पिक खेलों का आयोजन स्थल का चुनाव केवल अन्तर्राष्ट्रीय 'ओलम्पिक समिति' के द्वारा किया जाता है।

6 अप्रैल 1896 में एथेन्स शहर से आधुनिक ओलम्पिक खेलों का जन्म हुआ। प्रथम आधुनिक ओलम्पिक खेलों में महिलाओं द्वारा भाग नहीं लिया गया लेकिन 1900 पेरिस ओलम्पिक में महिलाओं ने खेलों में प्रतियोगिता करना स्वीकार किया। ओलम्पिक खेलों में पहली पदक विजेता इंग्लैंड की टेनिस खिलाड़ी सी. कूपर थी।

आधुनिक ओलम्पिक खेलों में ओलम्पिक मशाल, ओलम्पिक झण्डे और ओलम्पिक शुभंकर का अत्यन्त महत्व है। आधुनिक ओलम्पिक खेलों में 1928 के एम्सटर्डम ओलम्पिक से ओलम्पिक ज्योति की प्रथा शुरू की गई। वर्तमान ओलम्पिक खेलों के दौरान मशाल निरन्तर जलती रहती है। वर्ष 1932 के लांस एंजिल्स ओलम्पिक खेलों से ओलम्पिक शुभंकर की प्रथा शुरू की गई जिसे वर्तमान में ओलम्पिक मस्कट कहा जाता है।

ओलम्पिक खेलों के आयोजन स्थल एवं वर्ष

क्र.सं.	वर्ष	स्थान
1.	1896	एथेन्स
2.	1900	पेरिस
3.	1904	सेन्ट लुईस
4.	1908	लंदन
5.	1912	स्टाकहोम
6.	1916	बर्लिन
7.	1920	अटंवर्थ
8.	1924	पेरिस
9.	1928	एम्सटर्डम
10.	1932	लास एंजिल्स
11.	1936	बर्लिन
12.	1940	टोक्यो (हेलसिंकी) (विश्वयुद्ध के कारण स्थगित)

13.	1944	लंदन (विश्वयुद्ध के कारण स्थगित)
14.	1948	लंदन
15.	1952	हेलसिंकी
16.	1956	स्टाकहोम (मेलबोर्न)
17.	1960	रोम
18.	1964	टोक्यो
19.	1968	मैक्सिको सिटी
20.	1972	म्यूनिख
21.	1976	मांट्रियल
22.	1980	मास्को
23.	1984	लास एंजेल्स
24.	1988	सियोल
25.	1992	बर्सिलोना
26.	1996	अटलांटा
27.	2000	सिडनी
28.	2004	एथेन्स
29.	2008	बीजिंग
30.	2012	लंदन
31.	2016	रियोडी जेनेरियो (ब्राजील) प्रस्तावित

ओलम्पिक भावना (Olympic spirit)

ओलम्पिक भावना के विषय में अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति ने कहा है कि- "विश्व के युवाओं में ओलम्पिक भावना को प्रोत्साहित करना और जनता के लिये एक कार्यक्रम देना एवं एमच्योरिज्म के दर्शन को महत्व देना। राष्ट्रीय ओलम्पिक समितियों को यहाँ ध्यान में रखना होगा कि वह खेलों के प्रदर्शन और नये रिकार्डों पर नहीं बल्कि अपना ध्यान एमच्योर खेलों से सामाजिक शिक्षा, सौंदर्य, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर ज्यादा केन्द्रित करें।"

ओलम्पिक खेलों के लक्ष्य

1982 के ओलम्पिक चार्टर के अनुसार ओलम्पिक गतिविधियों के निम्नलिखित उद्देश्य वर्णित किये गये हैं।

1. खेल का आधार बनने वाले शारीरिक और नैतिक गुणों के विकास को बढ़ाना।
2. युवाओं को खेलों के माध्यम से शिक्षित करना, एक-दूसरे के बीच अच्छी समझ व मैत्रीभाव पैदा करना ताकि एक शांतिपूर्ण विश्व के निर्माण में मदद मिले।

3. ओलम्पिक सिद्धांतों को पूरे विश्व में फैलाना।
4. विश्वभर के खिलाड़ियों को हर चार वर्ष के बाद खेल महोत्सव (ओलम्पिक खेलों) के माध्यम से एक साथ लाना।

ओलम्पिक मोटो (Olymice Moto)- सीटियस (Citius), आलटीयस (Altius) फारटियस (Fortius) जिसका अभिप्राय है अधिक तेज़ दौड़ना, अधिक ऊँचा कूदना और अधिक मजबूत होना। ओलम्पिक छल्ले और मोटो का संयुक्त रूप ही ओलम्पिक प्रतीक है, जिस पर अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति का एकमात्र अधिकार होता है।

ओलम्पिक ध्वज (Olympic Flag)- अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति द्वारा दो प्रकार के ध्वजों का प्रयोग किया जाता है जो इस प्रकार हैं।

1. ओलम्पिक ध्वज 2. ओलम्पिक समारोह ध्वज

1. ओलम्पिक ध्वज (Olympic Flag)

1. यह 1914 में बैरन डी काबर्टिन द्वारा बनाये गये मॉडल पर आधारित है। इसे प्रथम बार 1920 के एंटवर्प (बेल्जियम) ओलम्पिक में फहराया गया था।
2. यह सफेद रेशम का बना होता है। ध्वज के बीच में एक-दूसरे से जुड़े विभिन्न रंगों के पांच छल्ले होते हैं, जो मैत्री भाव को लिये होते हैं। इनका रंग नीला, पीला, काला हरा और लाल होता है।
3. पांच छल्ले आपस में 'डब्ल्यू' का आकार बनाते हैं।
4. छल्लों के पाँच रंग पाँच महाद्वीपों को प्रदर्शित करते हैं। लाल रंग आस्ट्रेलिया, हरा यूरोप, पीला एशिया, नीला अमेरिका और काला अफ्रीका का प्रतिनिधित्व करता है।
5. नीला छल्ला ध्वज के निकट बायीं ओर सबसे ऊपर होता है।
6. छल्लों के नीचे ओलम्पिक मोटो सीटियस, आलटियस और फारटियस लिखा रहता है जिसका अभिप्राय है अधिक तेज दौड़ना, अधिक ऊँचा कूदना और अधिक मजबूत होना।
7. छल्लों और मोटो का संयुक्त रूप ही ओलम्पिक प्रतीक है। जिस पर अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति का एक मात्र अधिकार होता है।
8. इसका प्रयोग व्यापारिक अथवा व्यावसायिक प्रचार के लिये ट्रेडमार्क के रूप में नहीं किया जा सकता।
9. ओलम्पिक खेलों के दौरान ही इस ध्वज को फहराया जाता है।

2. ओलम्पिक समारोह ध्वज (Ceremonial olympic Flag)-

यह सिल्क का बना होता है व पाँच महाद्वीपों को सीमांकित करता है। यह उत्तोलन के उद्देश्य के लिये नहीं फहराया जाता है। यह ध्वज अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति के अध्यक्ष द्वारा समापन समारोह के अवसर पर शहर के मेयर को सौंप दिया

जाता है तथा अगले ओलम्पिक नगर के मेयर की सुरक्षा में रहता है।

उद्घाटन समारोह (Opening cere mony)- ओलम्पिक खेलों का उद्घाटन उस देश का राष्ट्रपति, राजा या शासनाध्यक्ष करता है, वह खेलों के आरम्भ की घोषणा करता है। इस समारोह में निम्न क्रम को अपनाया जाता है।

1. खेलों के अध्यक्ष के पहुँचने पर अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति के सदस्यों और राष्ट्रीय आयोजन समिति के सदस्यों का उनसे परिचय कराया जाता है।
2. इसके पश्चात् (अथिति) अध्यक्ष को मंच पर ले जाया जाता है।
3. मेजबान देश का राष्ट्रीय गीत प्रस्तुत किया जाता है।
4. खिलाड़ी अपनी टुकड़ी के साथ मार्च पास्ट करते हैं, वे चुस्त ड्रेस में अपने देश का झंडा उठाये और अपने देश का नाम लिखा हुआ एक बैनर लिये होते हैं।
5. यूनान की टीम सबसे पहले और मेजबान टीम सबसे पीछे होती है। बाकी टुकड़ियाँ वर्ण क्रमानुसार खड़ी होती हैं।
6. प्रतिभागी स्टेडियम का राउंड लेते हैं और केन्द्र में मंच के सामने अपने देश का झंडा व बैनर लगा कर अर्द्धवृत्ताकार रूप में मंच के सामने खड़े हो जाते हैं। मेजबान देश का खिलाड़ी प्रायः कप्तान ओलम्पिक शपथ लेता है।
7. आयोजन समिति के अनुरोध के साथ राष्ट्रपति खेलों के उद्घाटन की घोषणा करता है। नगाड़े एवं ओलम्पिक की धुन के साथ ओलम्पिक ध्वज फहराया जाता है।
8. तीन तोपों की सलामी के साथ शांति के प्रतीक कबूतर छोड़े जाते हैं।
9. एक धावक ओलम्पिक मशाल लिये हुए स्टेडियम में प्रवेश करता है, पूरे ट्रैक में दौड़ता है और चक्रपूरा पर बने हुए स्थान पर ओलम्पिक ज्वाला को प्रज्ज्वलित करता है। यह ज्वाला ओलम्पिक खेलों की पूरी अवधि तक बिना किसी व्यवधान के जलती रहती है।
10. मेजबान देश का राष्ट्रीय गान गाया जाता है। इसके साथ खिलाड़ी व अधिकारी मार्च करते हुए स्टेडियम से बाहर हो जाते हैं। व खेल विधिवत शुरू हो जाते हैं।

ओलम्पिक खेलों का समापन समारोह (Closing Ceremony of the Olympic Games)-

खेलों का समापन साधारण किन्तु बड़ा ही प्रभावी होता है। इसमें खिलाड़ी ध्वज, बैनर, नस्ल, जाति, रंग, राष्ट्रीयता को भूलकर एक-दूसरे में घुलमिल जाते हैं। वे स्टेडियम में मार्च करते हैं और मैदान के बीच एकत्र हो जाते हैं। इसके बाद तीन ध्वज फहराये जाते हैं। सबसे पहले यूनान ध्वज को यूनान की राष्ट्रीय गान की धुन के साथ, दूसरे नम्बर पर मेजबान देश का ध्वज वहाँ के राष्ट्रीय गान की धुन के साथ, अन्त में उस अगले देश का ध्वज (जहाँ अगले ओलम्पिक होंगे) वहाँ के राष्ट्रीय गान की धुन के साथ फहराया जाता है।

उपरोक्त प्रक्रिया पूर्ण होने पर आई.ओ.सी. का अध्यक्ष आयोजकों के प्रति अपना आभार प्रकट करता है व खेलों के समापन की घोषणा करता है। युवाओं से आह्वाहन करता है कि चार साल बाद अगले ओलम्पिक में फिर मिलें।

समापन की घोषणा के तुरन्त बाद ओलम्पिक ध्वज शहर के मेयर को सौंपा जाता है। अगले ओलम्पिक खेलों तक उस ध्वज की सुरक्षा का जिम्मा उस मेयर का ही होता है। नगाड़े व तुरही के साथ ओलम्पिक ज्वाला को विराम दिया जाता है। ओलम्पिक धुन के साथ ओलम्पिक ध्वज को उतार लिया जाता है।

ओलम्पिक चार्टर

1982 के ओलम्पिक चार्टर के अनुसार ओलम्पिक गतिविधियों के निम्नलिखित उद्देश्य वर्णित किये गये हैं।

1. खेल का आधार बनाने वाले शारीरिक और नैतिक गुणों का विकास करना व उनको बढ़ाना।
2. खेल के माध्यम से एक शान्तिपूर्ण विश्व का निर्माण करना।
3. ओलम्पिक के सिद्धान्तों को पूरे विश्व में फैलाना।
4. पूरे विश्व के खिलाड़ियों को चार वर्ष में एक बार खेल के माध्यम से एक साथ लाना, भाईचारा व सामंजस्य स्थापित करना।

एशियाई खेल (Asian Games)

एशियाई खेलों का आयोजन करने का मुख्य उद्देश्य, एशियाई देशों के आपसी सम्बन्धों को विकसित करना एवं एशिया महाद्वीपों को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाना था। एशियाई ओलम्पिक परिषद के साथ जुड़े सदस्य देश एवं क्षेत्रीय देशों की टीमें इस खेल मेले में प्रतिभागी होती हैं। एशियाई खेलों को ओलम्पिक खेलों की तर्ज पर चार वर्ष के अन्तराल में आयोजित किया जाता है एवं ओलम्पिक खेलों के आयोजन के दो वर्ष पश्चात् इन खेलों का आयोजन होता है। एशियाई खेलों के इतिहास पर नजर दौड़ाई जाये तो इसका उदय पूर्वी ओलम्पिक खेल के रूप में सन् 1913 में मनीला शहर (फिलीपीन्स) में हुए खेलों के द्वारा माना जाता है जिसमें फिलीपीन्स, चीन, जापान, मलेशिया एवं हांगकांग जैसे देशों ने भाग लिया। इन खेलों का बाद में फारइस्ट चैम्पियनशिप के नाम से नामकरण हुआ जिसका आयोजन लगातार 1934 तक किया गया। वर्ष 1936 (दो वर्ष पश्चात्) इन खेलों का नाम पुनः पूर्वी ईस्टर्न चैम्पियनशिप कर दिया गया। जिसका आयोजन टोक्यो (जापान) में किया गया।

एशियाई खेलों की सफलता में भारत का विशेष योगदान है। अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति में भारतीय मूल के सदस्य डॉ. गुरुदत्त सोंधी ने वर्ष 1934 में प्रथम पश्चिमी एशियाई खेल समारोह आयोजित किये जिसमें भारत के साथ-साथ श्रीलंका, म्यांमार तथा अफगानिस्तान ने भाग लिया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान पूर्वी एशियाई

एवं पश्चिमी एशियाई खेलों का आयोजन नहीं हो सका। भारत ने पाँच दशक पूर्व इन खेलों की स्थापना, एशियाई मूवमेंट का निर्माण किया। प्रो.जी.डी सोंधी के नेतृत्व में। स्वर्गीय महाराजा पटियाला यादवेन्द्र सिंह, जो भारतीय ओलम्पिक संघ के अध्यक्ष थे, इन दोनों खेल प्रेमियों के अथक प्रयासों के फलस्वरूप आज एशियाई खेल अपने वर्तमान स्वरूप में हमारे समक्ष है। इनके अलावा श्री एम.सी धवन, उनकी पत्नी, श्री एंथोनी, जनरल के.एम. करिअप्पा एवं पं. जवाहर लाल नेहरू ने खेलों को प्रोत्साहित करने में अहम भूमिका निभाई। प्रथम एशियाई खेल 4 मार्च से 11 मार्च 1951 को नई दिल्ली में आयोजित किये गये। ये नेशनल स्टेडियम में आयोजित किये गये। एशिया के सबसे बड़े खेल महोत्सव में ग्यारह देशों ने भाग लिया एवं छह खेलों में प्रतिस्पर्धाएँ हुईं। इन खेलों में भाग लेने वाले देश थे अफगानिस्तान, बर्मा, श्रीलंका, भारत इंडोनेशिया, ईरान, जापान, नेपाल, फिलीपीन्स, सिंगापुर और थाइलैंड।

उद्घाटन समारोह (Opening ceremony)- एशियाई खेलों का उद्घाटन समारोह ओलम्पिक खेलों की तर्ज पर किया जाता है। प्रथम एशियाड का उद्घाटन समारोह ऐतिहासिक, रंगबिरंगा, मनमोहक और रोमांचक था। राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद घोड़ा गाड़ी पर सवार होकर उद्घाटन स्थल पर पहुँचे। एशियाई खेलों के मार्च पास्ट का नेतृत्व अफगानिस्तान ने किया जिसके पीछे भारत सहित दूसरे देश वर्णक्रमानुसार थे। खेलों की अवधि आठ दिन की थी।

समापन समारोह :- ओलम्पिक खेलों की तर्ज पर एशियाई खेलों का समापन समारोह होता है। प्रथम एशियाड में आठवें दिन ग्यारह देशों के खिलाड़ियों ने जिनमें से अधिकतर अपने पदक धारण किये हुए थे स्टेडियम का चक्कर लगाया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि पं. जवाहर लाल नेहरू थे। अन्य सभी कार्य ओलम्पिक खेलों की तरह सम्पन्न हुए।

राष्ट्रमण्डल खेल (Common Wealth Games)- राष्ट्रमण्डल खेलों के जन्मदाता एस्टले कूपर को कहा जाता है जिन्होंने वर्ष 1871 में ब्रिटिश साम्राज्य को अधिक प्रसिद्ध व दूसरे देशों को नज़दीक लाने के विचार से खेलों को महोत्सव के रूप में कराने का प्रयत्न किया। पहला विश्वयुद्ध शुरू होने से इस खेल महोत्सव को 19 वर्षों तक आयोजित नहीं किया जा सका। 16 अगस्त 1930 को यह खेल एक कनैडियन व्यक्ति एन.एच. क्रो के बेमिसाल व कठिन प्रयत्नों के बाद फिर शुरू हुए। इन खेलों का नाम बार-बार बदलता रहा है। सन् 1978 से सिर्फ राष्ट्रमंडल (common wealth Games) के नाम से जाने जाते हैं।

राष्ट्रमंडल खेल दूसरे खेल उत्सवों से कुछ भिन्न हैं। इन्हें 'मैत्री खेल' के नाम से भी जाना जाता है। इनका सिद्धात है "मनोरंजन अधिक व कम सख्त नियम ताकि राष्ट्रीय विरोधी मुकाबलों की भावना से उपजने वाले दबाव की जगह नई प्रकार की मौज मस्ती का साधन बनने चाहिये" क्योंकि इनमें भाग लेने वाले देशों में अंग्रेजी भाषा

प्रचलित है इसलिये भाईचारे की भावना शीघ्र कायम हो जाती है। बड़ी राष्ट्रीय टीम अक्सर छोटे देशों से आये एक या दो प्रतियोगियों को अपना कर उन्हें अपने साथ अभ्यास व कोचिंग देती हैं और ओलम्पिक के कड़े मुकाबलों के लिये तैयार करती हैं।

राष्ट्रमण्डल युवा खेल (Common wealth Youth Games)- प्रथम राष्ट्रमण्डल युवा खेल ऐडिन्ब्रा (स्काटलैण्ड) में सन् 2000 में राष्ट्रमण्डल खेल फेडरेशन की सहायता से शुरू हुए 115 देशों के 18 वर्ष से कम उम्र के 597 खिलाड़ियों ने भाग लिया और 8 खेलों में अपनी कला का प्रदर्शन किया। इनमें शामिल खेल थे- तलवारबाजी, एथलेटिक्स हॉकी, जिम्नास्टिक, स्कैस, तैराकी, टेनिस और वेट लिफटिंग।

एफ्रो- एशियन खेल (Afro Asian Games)- प्रथम एफ्रो एशियन खेल 25 अक्टूबर 2003 से 2 नवम्बर 2003 तक हैदराबाद में आयोजित किये गये। अनेकों कारणों से इनका आयोजन विलम्बित होता रहा है और इनका आयोजन अपने आप में इतिहास बन गया। इन खेलों का सफर अप्रैल 1983 से प्रारम्भ होना था जिसका आयोजन नई दिल्ली में तय किया गया था। लेकिन ओलम्पिक रिव्यू कमेटी के अनुसार इन खेलों का आयोजन स्थल 'कुवैत' में परिवर्तित कर दिया गया। वर्ष 2003 में भारत द्वारा पहली बार इतने बड़े स्तर के खेलों का आयोजन कराया गया। प्रथम एफ्रो-एशियाई खेलों में कुल 2000 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिन्होंने केवल 8 खेलों में प्रतिभागिता की।

इन खेलों में भाग लेने वाले देश अफ्रीका एवं एशिया महाद्वीप से सम्बन्धित होते हैं। खेलों के आयोजन का उद्देश्य एशियाई एवं अफ्रीका के देशों के बीच आपसी संबंधों को विकसित कर खेलों के स्तर का विकास करना है। प्रथम अफ्रीकी एशियाई खेलों में सबसे ज्यादा 25 स्वर्ण पदक प्राप्त चीन पदक तालिका में सबसे ऊपर रहा एवं भारत कुल 19 स्वर्ण पदक प्राप्त कर दूसरे स्थान पर रहा। एफ्रो एशियन खेल के आयोजन स्थल इस प्रकार हैं।

वर्ष	स्थान (देश)
2003	हैदराबाद (भारत)
2007	दक्षिणी, नाइजीरिया एवं इजिप्ट (संयुक्त रूप से)

*